

व्याकरण

वि आ करण

विशेष प्रकार से समझना या करना

व्याकरण ✶

व्याकरण वह विधा या विषय है जिसके द्वारा शुद्ध लिखना व शुद्ध प्रयोग करने का ज्ञान प्राप्त होता है।
भाषा के अंग / इकाई

✶ वर्ण (भाषा के सबसे छोटी इकाई)

✶ वाक्य (भाषा के सबसे बड़ी इकाई)

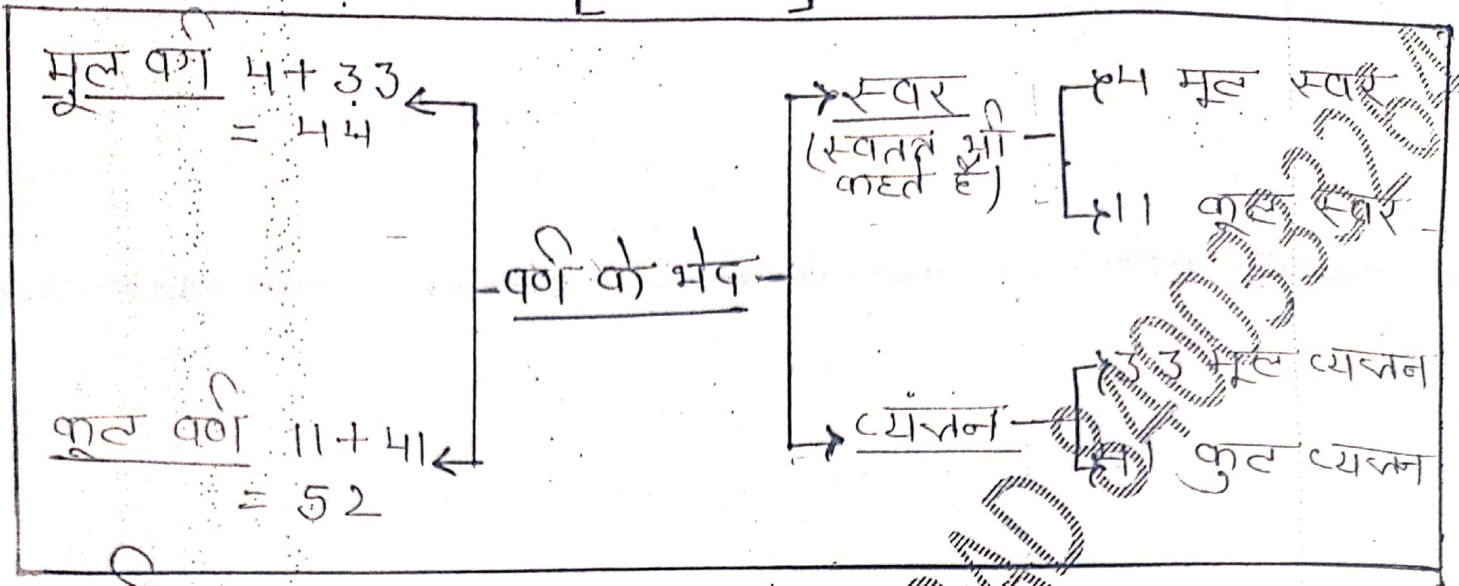
भाषा के सबसे छोटी इकाई वर्ण होती है।
भाषा के सबसे छोटी लिखित इकाई ✶ वर्ण
भाषा के सबसे छोटी मौखिक इकाई ✶ ध्वनि / स्वन

Note ✶

ध्वनि का लिखित रूप ही वर्ण होता है।
अर्थ के आधार पर भाषा के सबसे छोटी इकाई शब्द होती है।

भाव या भावार्थ के आधार पर भाषा के सबसे छोटी इकाई वाक्य होता है।

[वर्ण]



वर्ण :- वर्ण- अक्षरों में मूल ध्वनि को कहते हैं। अर्थात् वर्ण वे होते हैं जिनका पुनः अक्षरों, अक्षरों नहीं किया जा सकता।

उदाहरण :- क + अ = का

अक्षर वर्ण वर्ण

Note :- प्रत्येक वर्ण अक्षर होता है किन्तु प्रत्येक अक्षर वर्ण नहीं होता है।

स्वर :- इन वर्णों के उच्चारण में किसी भी दूसरे वर्ण की सहायता न ली जाय स्वर कहलाते हैं। इनके उच्चारण में प्राण वायु किसी विद्युत वाद्य के बाहर निकल जाता है इसलिए ये स्वतंत्र वर्ण कहलाते हैं।

स्वर के भेद :-

① मात्रा / उच्चारण काल के आधार पर स्वरों के भेद :-

स्वर के 3 भेद होते हैं :-

① ह्रस्व स्वर ② दीर्घ स्वर ③ लृप्त स्वर

② ओष्ठ की आकृति के आधार पर स्वरों के भेद
2 भेद होते हैं :- ① क्षन्तकार / वर्तुल

② अर्द्धक्षन्तकार / अवर्तुल

③ जीभ / लीटवा की क्रियाशीलता के आधार पर स्वरों के भेद :-

3 भेद होते हैं :- ① अग्र स्वर ② मध्य स्वर

③ पश्च स्वर

④ मुखकृति / मुख विवर या मुख शुल्ब के आधार पर स्वरों के भेद :-

4 भेद होते हैं :- ① संवृत स्वर ② अर्द्धसंवृत स्वर

③ विवृत स्वर ④ अर्द्धविवृत स्वर

⑤ अनुनासिकता के आधार पर स्वरों के भेद :-

2 भेद होते हैं । ① अनुनासिक स्वर

② निरानासिक स्वर

① मात्रा / उच्चारण काल के आधार पर स्वरों के भेद :-

आ — अ + अ	} एक ही मूल स्वर से बना है
इ — ई + इ	
उ — ऊ + उ	
ए — ऐ + ए	} संयुक्त स्वर की संख्या 4 होती है।
ऐ — अ + ए	
ऑ — अ + उ	
आ — अ + आ	

① दृक् / लघु / दीर्घ / एकमात्रिक / मूल स्वर :-

4 होते हैं अ, इ, उ, ए

② दीर्घ स्वर गुरु या लघु से संघी या द्विमात्रिक स्वर कहते हैं।

③ लघु स्वर त्रिमात्रिक स्वर :-

अ + 7 दीर्घ स्वर = 8 होते हैं लघु स्वर

Note

दृक् स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसका दो गुना समय दीर्घ स्वर के उच्चारण में लगता है। तथा दृक् स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसका उ गुना समय लघु स्वर के उच्चारण में लगता है। इसलिये दृक्, दीर्घ व लघु स्वर को एकमात्रिक, द्विमात्रिक व त्रिमात्रिक कहते हैं।

Note *

जब किसी स्वर वर्ण को हम लम्बे समय तक रखी-चकर बोलते हैं तो वह व्यंजन का रूप धारण कर लेता है व्यंजन स्वरों की संख्या 8 होती है।

2 आवृत्ति / आवृत्ति की मात्रा के आधार पर स्वरों के भेद :-

(i) वृत्ताकार / वर्तुल स्वर :-

4 होते हैं अ, ऊ, आ, इ

(ii) अवृत्ताकार / अवर्तुल स्वर :-

अ, आ, ई, इ, ए, ऐ, अ

7 होते हैं।

3 निद्रा / निद्रा की क्रियाशीलता के आधार पर स्वरों के भेद :-

3 भेद होते हैं :-

1 आगम स्वर — इ, ई, ए, ऐ, अ

2 मध्य स्वर — अ

3 पश्च स्वर — आ, उ, ऊ, ओ, औ

4 मुख्यता / मुख्य विवर / मुख्य स्थिति के आधार पर स्वरों के भेद :-

4 भेद होते हैं।

1 संवृत स्वर (Closed) * इ, ई, उ, ऊ, अ

2 अर्धसंवृत स्वर (Half Closed) * ए, आ

3 अर्धविवृत स्वर (Half open) * अ, ऐ, औ।

4 विवृत स्वर (Open) * आ

5 अनुनासिकता के माध्यम पर स्वरों के भेद

2 भेद होते हैं।

1 अनुनासिक स्वर -

अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में नाक और मुँह दोनों का साथ-साथ प्रयोग होता है।
जैसे जाँव, पाँव, छाँव, आँगन आदि।

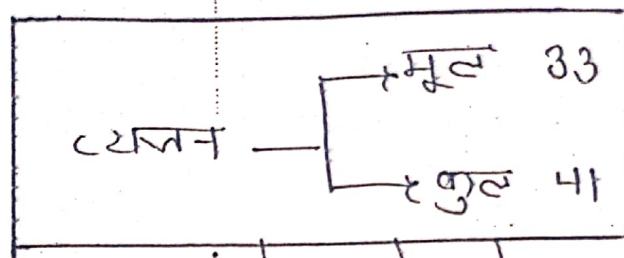
Note *

अँ, माँ, हिँ, ईँ, उँ, ऊँ, अहँ, ऐँ, औँ
जाँ, आँ ये सभी अनुनासिक कहलाते हैं।

2 निरनुनासिक स्वर * निरनुनासिक व वर्ण कहलाते हैं जो अनुनासिक न हो।
जैसे उधर, उधर, चान्ना, पुरुष, पापा इत्यादि।

व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय किसी दूसरे वर्ण की सहायता की जाय उन्हें व्यंजन कहते हैं।



व्यंजनों के भेद

व्यंजन के पांच भेद होते हैं।
1. अध्ययन कि दृष्टि से व्यंजनों के भेद।

- (1) स्पर्श-व्यंजन / वर्गीय व्यंजन के क से प वर्ग * 25
- (2) उच्चारण कि दृष्टि से व्यंजन के भेद
- (3) उच्चारण स्थान की दृष्टि से वर्गों के भेद
- (4) वायु प्रसव कि दृष्टि से वर्गों के भेद
- (5) लोब / नाद / कम्पन कि दृष्टि से वर्गों के भेद

(1) अध्ययन कि दृष्टि से व्यंजनों के भेद -

6 भेद होते हैं।

(i) स्पर्श व्यंजन / वर्गीय व्यंजनों :-

क	वर्ग *	क	ख	ग	घ	ङ	} * कठ
च	वर्ग *	च	छ	ज	झ	ञ	
ट	वर्ग *	ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	वर्ग *	त	थ	द	ध	न	
प	वर्ग *	प	फ	ब	भ	म	

* कठ
 * तालु
 * मुखा 5 X 5 = 25
 * दंत
 * गण्ठ

(i) अ-तस्थ व्यंजन :-

य, र, ल, व → अर्द्धस्वर (डा० वासुदेवनन्दन) कहते हैं

↳ अ-य विधान + आयोग के अनुसार
→ य, व = यही मान्य है जो ही अर्द्धस्वर
माना गया है।

(ii) उष्म व्यंजन → (ज, ष, स, ह) → संचयन व्यंजन
भी कहते हैं।

(iii) संयुक्त व्यंजन → प होता है
क + क = क्
त + त = त्
छ + छ = च्
श + श = श्
र + र = र् = (र + र)

(iv) द्विगुण व्यंजन → (ङ, ङ)

(v) अयोगवर्ग → अनुस्वार (—), विसर्ग (:) ।

(i) स्पर्श व्यंजन → स्पर्श व्यंजनों के उच्चारण
में जड़वा मुख के अवयवों या अंगों
को क्रमशः कण्ठ, तालु, मूर्धा, दांत
ऊपर नीचे आते आपस में स्पर्श करते
हैं।

इसलिए इन वर्गों को स्पर्शीय व्यंजन कहा जाता है वर्गों में बाटे होने के कारण इन्हें स्पर्शीय व्यंजन कहा जाता है। वर्गों में बाटा होने के कारण व्यंजन इन्हें स्पर्शीय व्यंजन कहते हैं इनमें क, च, ट, त, थ, प वर्ग आते हैं।

2 अन्तस्थ व्यंजन * अन्तस्थ व्यंजनों के उच्चारण में प्राण वायु बिना किसी विघ्न वाधा के अन्दर से सीधे बाहर निकल आती है इसलिए इन्हें अन्तस्थ व्यंजन कहते हैं इनकी कुल संख्या 4 (य, र, ल, व) होती है।

3 उष्म व्यंजन * उष्म व्यंजनों के उच्चारण में प्रिहवा मुख के अवयवों के पास तो आती है किन्तु स्पर्शी नहीं करती जिससे जीभ और मुख के अवयवों के बीच से प्राण वायु रगड खाते हुए या चर्बना करते हुए अंदर से बाहर निकलती है जिससे वायु गर्म हो जाती है और उसमें से एक प्रकार की उष्मा निकलती है जिससे ऊष्मीय व्यंजन कहा जाता है इनकी कुल संख्या 4 (श, ष, स)।

4 संयुक्त व्यंजन * जब दो अलग-अलग मूल व्यंजन संयुक्त होकर एक नया व्यंजन बनाते हैं तो उसे संयुक्त व्यंजन कहा जाता है इनकी कुल संख्या 4 होती है * ह्र, त्र, ज्ञ, ण।

5 द्विगुण व्यंजन :-

स्पर्श व्यंजन के दू वर्गों के इ, द वर्गों के नीचे लाइनलात चिह्न । एक बिन्दु लगाकर नये वर्गों इ, द का बना लिया जाता है चूँकि इससे एक नया गुण स्थापित कर लिया इसलिये इसे द्विगुण व्यंजन कहा जाता है इनकी कुल संख्या 2 (इ, द) है।

6 अयोगवाह :-

आचार्य किशोरीदास वल्लभैया ने अनुस्वार और विजरी इन दो वर्गों को अन्य विधना के तरह स्पष्ट स्वर तो नहीं मानते किंतु वे इसे व्यंजन भी नहीं मानते उनका तर्क है कि व्यंजन तो स्वरों के पूर्व आते हैं किन्तु अनुस्वार व विजरी स्वरों के पूर्व आकर धातु के पश्चात् आते हैं इसलिये ये व्यंजन भी नहीं हैं उन्होंने इन दोनों वर्गों को अयोगवाह कहा है। अयोगवाह 3 शब्दों से मिलकर बना है।

अ + योग + वाह

↓
नहीं

↓
जुड़ाव / योग

↓
बहने करना / साथ-साथ रहना

योग न होने पर भी जो साथ-साथ रहे उसे अयोगवाह कहते हैं।

2. उच्चारण के दृष्टि से व्यंजनो को भेद

8 भेद होते हैं।

(Imp.)

① स्पर्शी व्यंजन (केवल स्पर्शी) :-

क वर्ग = क, ख, ग, घ

ट वर्ग = ट, ठ, ड, ढ

त वर्ग = थ, द, ध, न = 16

प वर्ग = प, फ, ब, भ

ये प्रथम 4-4 वर्ग स्पर्शी व्यंजन कहलाते हैं।
इनके उच्चारण में केवल स्पर्शी होता है।
इनकी कुल संख्या 16 होती है।

② संघर्षी व्यंजन :- ञ, ष, झ, ञ केवल 4 होता है हिन्दी के हैं।

क, ख, ग, घ, ङ के आवृत व्यंजन कहते हैं।

अरबी / फारसी / मध्यमान / आगत / विदेशी कहा जाता है।
N.C.H.R.T. के ख, ग, घ, ङ 3 माना है लेकिन कुल
शाला विषयसाद सितार - ए - हिन्द { 5 होते हैं
= 4 आवृत स्वर

③ स्पर्शी - संघर्षी व्यंजन :-

च, छ, ज, झ 4 होती है।

④ नासिक्य व्यंजन :- इनकी संख्या 5 होती है।

ङ, ञ, ण, न, म

5) अर्द्धस्वर : य, व

Note * डा० वासुदेवनंदन के अनुसार अर्द्धस्वर य, र, ल, व ।

6) अः, इ का काल क्या कहा जाता है

7) प्रकाशित / लुपित :- केवल 'र' होता है।

8) पार्श्विक :- केवल 'ल' होता है।

9) ताडनतात / द्विगुण / अक्षिप्त :- इ, उ होता है।

उच्चारण स्थान के आधार पर वर्गों के भेद :-

1) अंत्य वर्ग : क वर्ग + ह, विसर्ग + अ, आ

2) तालव्य वर्ग : च वर्ग + य, श + ष, झ

3) मूर्धन्य वर्ग :- ट वर्ग + र, ष + ञ

4) दन्त्य वर्ग :- त वर्ग + ल, स + व (संस्कृत में होता है)

5) ओष्ठ्य वर्ग :- प वर्ग + + उ, ऊ

कंठ्य तालव्य → क → अ + इ → कंठ्य तालव्य
 ↓ ↓
 कण्ठ्य लालु
 → ख → अ + ए → कंठ्य तालव्य
 ↓ ↓
 कण्ठ्य

कण्ठ्य ओष्ठ्य → आ → अ + उ → कंठ्य ओष्ठ्य
 ↓ ↓
 ओष्ठ्य
 → आँ → अ + आ → कंठ्य ओष्ठ्य
 ↓ ↓
 ओष्ठ्य

कण्ठ्य मूर्धन्य → क → क + घ → कण्ठ्य मूर्धन्य
 ↓ ↓
 कण्ठ्य मूर्धन्य

दन्त्य मूर्धन्य → त → त + र → दन्त्य मूर्धन्य
 ↓ ↓
 दन्त्य मूर्धन्य

ल → ल + अ → तालव्य नासिक्य
 ↓ ↓
 तालव्य नासिक्य

श → श + र → तालव्य मूर्धन्य
 ↓ ↓
 तालव्य मूर्धन्य

म वायु प्रक्षेप कि दृष्टि से वर्णों के भेद

2 भेद होते हैं।

- ① अल्पप्राण → प्रिन वर्णों के उच्चारण में वायु (जलवायु) मुख से कम मात्रा में निकलती है।

अल्पप्राण वर्ण कहते हैं प्रत्येक वर्ण का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण तथा समस्त अन्तस्थ व्यंजन अल्पप्राण होते हैं।

Note *

पं कामता प्रसाद गुरु के अनुसार सभी स्वर भी अल्पप्राण होते हैं।

महाप्राण $1 \frac{3}{5} + \text{अन्तस्थ} + \text{सभी स्वर}$

→ प्रिन वर्णों के उच्चारण में वायु मुख से आती मात्रा में विकृत और प्रिनके उच्चारण में 'हकार' की हवनि उत्पन्न होती है वे सभी महाप्राण वर्ण कह जाते हैं।

प्रत्येक वर्ण का दूसरा और चौथा वर्ण तथा सभी उष्म वर्ण महाप्राण होते हैं।

$$24 + \text{उष्म} = 10 + 4 = 14 \text{ वर्ण}$$

Note *

① अल्पप्राण व्यंजन में 14 हैं।

② अल्पप्राण वर्ण में 30 (14 + 11 स्वर) हैं।

(हवनि)

5 चाद / कम्पन / गुंज के आधार पर वर्णों के भेद :-

① अव्यंज वर्ण → प्रिन वर्णों के उच्चारण में स्वर तात्पर्या कम्पन नहीं करते हैं और

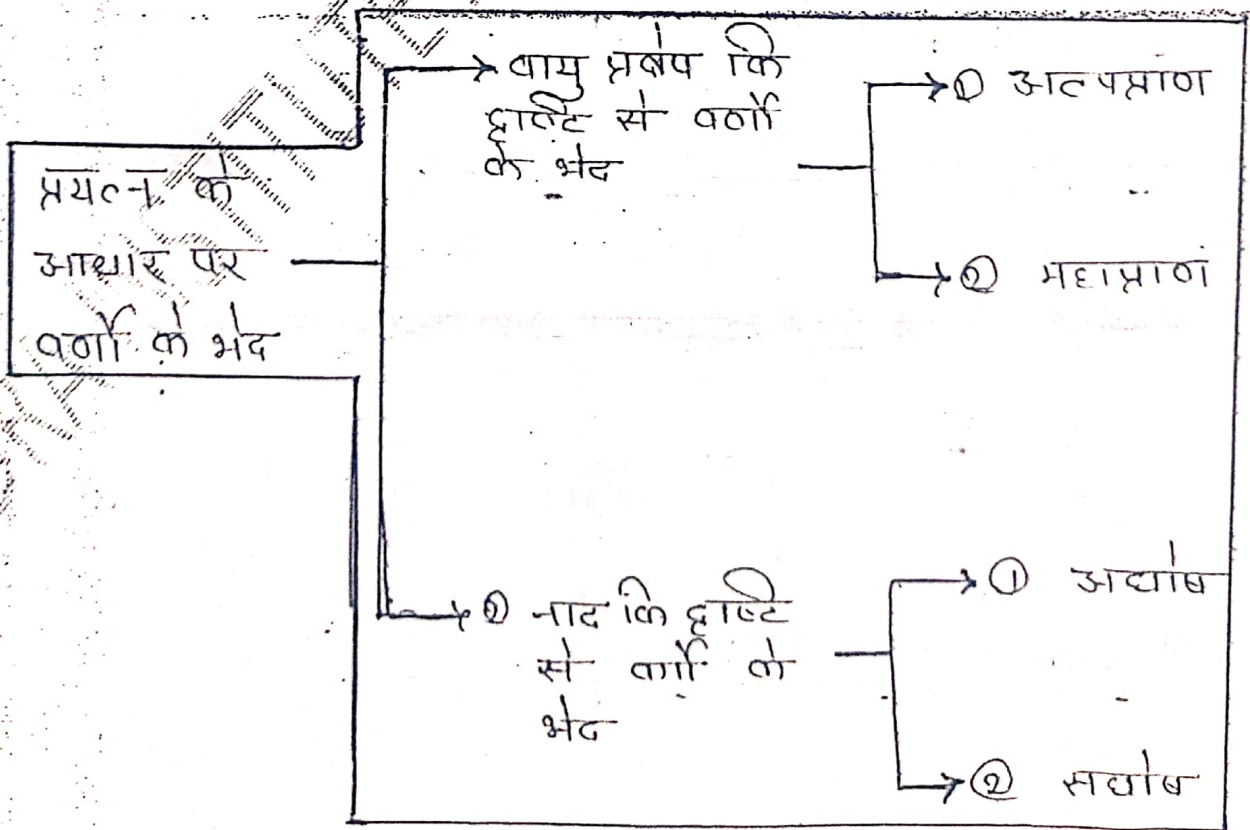
प्रिसम केवल अवास का प्रयोग होता है वे सभी वणी अघोष वणी कहलाते हैं।

प्रत्येक वणी पहला और दूसरा वणी तथा ज, ष, स अघोष वणी होते हैं।

12 ज, ष, स 13 वणी होते हैं।

2 सघोष या घोष वणी :- प्रिन वणी के उच्चारण में स्वर तांत्रिया सम्पन्न करता है और प्रिनमे केवल नाद का प्रयोग होता है वे सभी वणी घोष / सघोष वणी कहलाते हैं।

प्रत्येक वणी का तिसरा, चारथा और अन्ववा वणी तथा सभी अन्तर्य व्यंजन के साथ ही 'ह' और सभी स्वर सघोष वणी कहलाते हैं।



अद्याय		संद्याय		
अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
	श, ष, स	अ-तस्थ	ह	समाप्ति

* भाग स्वरों की होती है

नियम - 1

'र' के रूप

① र का सामान्य रूप 'र' के सामान्य रूप में 'र' स्वर सहित होता है और यह स्वर सहित व्यंजन के साथ प्रयोग किया जाता है।

जैसे - राह, कमर, राजा

② रेफ 'र' (-) :- रेफ 'र' में 'र' स्वर होता है और यह स्वर सहित व्यंजन के साथ प्रयोग किया जाता है।

जैसे *

कर्म, — * क + मे → क + मूर्
धर्म — *
मर्म — *

③ पदेन 'र' * पदेन 'र' में 'र' स्वर सहित होता है और यह स्वर स्वतः व्यंजन के साथ प्रयोग किया जाता है ये 2 प्रकार के होते हैं।

शब्दों पाठों वाले व्यंजनों के साथ (,) पदेन 'र' (,) का प्रयोग होता है जबकि गोलकार वर्णों के साथ पदेन 'र' (।) का प्रयोग होता है।

जैसे * ① प्रकाश, कम, चन्दा, व्रत आदि।

② हूक, हूम, हून, राष्ट्रीय आदि।

Note *

① मात्राये स्वरों कि होती है व्यंजनों कि नहीं उसलिये 'र' के रूप का हम मात्रा नहीं कह सकते।

② हृदय, पृथ्वी आदि में 'र' की मात्रा लगी हुयी है उसमें 'र' का कोई रूप नहीं लगा है।

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण 0 → 22 हैं

त थ द ध न □ → 2 हैं

प फ ब भ म { } → 1 हैं

य र ल व 0 → 8 हैं

श ष स ह

ड छ ट ठ ड ढ ण जोड़ि वही

{ २ }

नियम 2 *

व्यंजनना के स्वर सहित / आधा लिखने

का नियम : - ऐसे व्यंजन जिसमें खड़ी पार

(1) हो और व वगे उसे पार न करते हो
ऐसे व्यंजन के कुल संख्या 22 हैं और
और ऐसे व्यंजन का किसी शब्द के साथ
आधा लिखने के लिये व खड़ी- पार का
हटा दिया जाता है।

नियम 3 *

व वही (व्यंजन) जिसमें खड़ी
पार का प्रयोग हो हुआ है किंतु वह
व्यंजन खड़ी पार को लाघोर भाग नला
जाता है। ऐसे कुल व्यंजन के संख्या

2 (क, ङ) हैं।

ऐसे व्यंजनों का आधा लिखने (स्व
राहित) के लिये खड़ी पाई के आगे व
दुपे वगे का आधा कर दिया जाता है।
जैसे * क्यारी, मुफ्त

नियम - 4 * ऐसे व्यंजन जिसमें खड़ी पाई का
प्रयोग न किया गया हो इसमें (र) का छोड़
शेष 8 व्यंजनों का गुच्छ वगे काटा जाता है
और 8 वा व्यंजनों का आधा लिखने के लिये
हल चिह्न का प्रयोग किया जाता है अर्थात्
उपरोक्त नीचे हल चिह्न (१) लगा दिया जाता है

द्विव

एक ही वगे के संयुक्त होने से
वही शब्द द्विव कहलाता है।

जैसे - कटवाली, बिल्ली, दिवली

संयुक्ताक्षर / व्यंजन गुच्छ :-

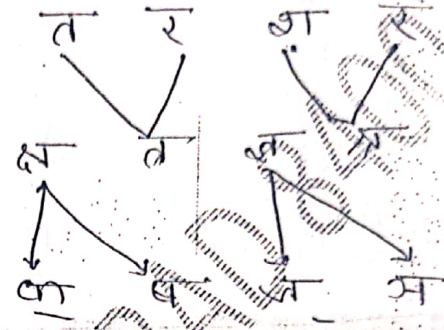
जब 2 अलग
अलग वगे संयुक्त होकर किसी नये शब्द
का निर्माण करे तो वह संयुक्ताक्षर होता है।
जैसे :-

क्यारी, च्यारी, न्यारी, गुच्छ ।

हिन्दी शब्दकोश में वर्णों का क्रम

अं, अँ, अः ; अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ।

क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व
श ष स ह



०१ क्षत्रिय - क + ख + स + व + र + इ + यू + अ

०२ क्षमा - क + ख + अ + म + आ

०३ क्षय - क + ख + अ + य + अ

०४ क्षम - क + ख + र + अ + म + अ

०५ क्षम - क + अ + र + म + अ

०६ क्षम - क + अ + म + अ

किस नम्बर
पर आयगा
यही बताता था

अमानक वर्ण * वे सभी वर्ण जो वर्तमान
के शब्दकोश से मान्य नहीं हैं वह
अमानक वर्ण हैं ।

ये *
अ, इ, उ, ए, ओ, औ

अ, इ, उ, ए, ओ, औ

Note *

- ① वे वणें जो पूर्व में तो मा-य थे लेकिन वर्तमान में मा-य नहीं हैं व अमानक वणें हैं।
- ② धुण्डी (घ) वाले वणों के ऊपर से शिरा रेखा कभी नहीं गुजारी जाती।
: जैसे - धमाल, भौकाल आदि।
- ③ विसर्ग (:) वाले शब्दों में विसर्ग के ऊपर से शिरा रेखा नहीं गुजारी जाती। जैसे - दुःख
- ④ काकल / काकल्य / दस / स्वरयंत्रमुरली : - (ह)
- ⑤ सिद्धामूल्य / सिद्धमूलक : - (ह)

शब्द

शब्द * जो या जो से अधिक वर्णों के साथ एक योग को शब्द कहते हैं।

और जब उस शब्द का प्रयोग किसी प्रसंग वाक्य में किया जाता है तो वह संयुक्त स्वतंत्र न होकरके व्याकरण के नियमों से बना जाता है तब उसे हम शब्द न कहकर 'पद' कहते हैं।

शब्द के भेद -

5 होते हैं।

① अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद -

होते हैं ① साधक शब्द ② निरर्थक शब्द

② स्थाति / उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद -

5 होते हैं।

① तत्सम ② तदभव ③ देशज ④ विदेश
5 प्रकार

③ व्युत्पत्ति / रचना / संरचना / बनावट के आधार पर :-

3 होते हैं।

① मूल शब्द ② योगिक शब्द ③ योग मूल शब्द

④ शब्द शक्ति के आधार पर शब्दों के भेद - 3

⑤ रूपांतर के आधार पर शब्दों के भेद - 2

① विकारी ② आविकारी

① अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद :-

अर्थ के

आधार पर शब्दों के मुख्य रूप से 2 भेद होते हैं

① सार्थक

② निरर्थक

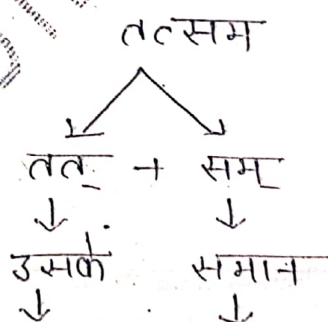
सार्थक शब्दों को साथ प्रयुक्त वे शब्द जिनका कोई भेद नहीं होता निरर्थक शब्द कह जाते हैं।
जैसे -

लौटा - उलौटा, लौटने - उलौटने, स्वादिया - अलौटिया
↓ ↓
सार्थक निरर्थक
लौटाना, लौटाना

② स्मृत / उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद -

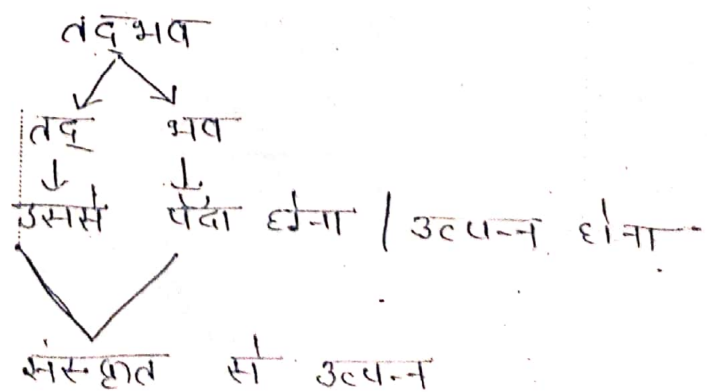
इस आधार पर शब्दों के कुल 5 भेद हैं।

① तत्समः



जो संस्कृत के समान होता है उसे तत्सम कहते हैं।

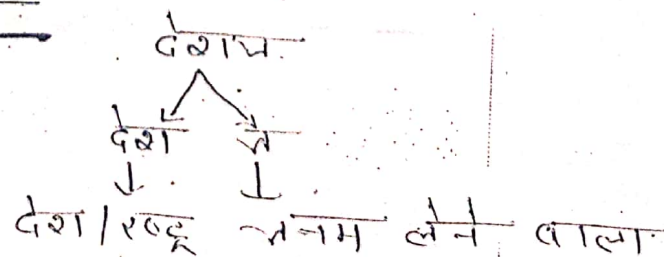
② तद्भव :-



NOTE

- (1) 'व' से बना शब्द अधिकतर तत्सम होते हैं।
- (2) लाटव्य (ल) और मूर्धन्य (व) से बना शब्द अधिकतर तत्सम होते हैं।
- (3) संयुक्ताक्षर (क्ष, त्र, ज्ञ, श्) से बना शब्द अधिकतम तत्सम होते हैं। तथा इसके आतिरिक्त अन्य संयुक्त शब्द भी तत्सम होते हैं।
- (4) अनुस्वार (ं) से बना शब्द अधिकतर तत्सम होते हैं।
- (5) अनुनासिक (ँ) से बना शब्द तत्सम नहीं होते हैं।
- (6) द्विगुण (द, ड) से बना शब्द तत्सम नहीं होते हैं।
- (7) 'श्च' से बना शब्द अधिकतर तत्सम होता है।
- (8) स्फोर (स्फ) और पदेन र (र्, र) से बना शब्द अधिकतर तत्सम होते हैं।
- (9) 'ण' से बना शब्द अधिकतम तत्सम होते हैं।
- (10) कठिन शब्द अधिकतर तत्सम होते हैं।

3 देशज शब्द :-



* अपने ही देश में जन्म लेने वाले शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं देशी व शब्द होते हैं जो अपने ही देश में बोल - चाल की भाषा में गढ़ लिये जाते हैं। इनको जो अनुकरण वाले शब्द होते हैं और वे हवा में मुक्त होते हैं वे सभी भी आते हैं।

जैसे:-

खट-खट, टिम-टिम, खटखटाना, पिन-पिन, खिड़की, लोटा, पगड़ी आदि।

4 विदेशी :- वि + देश + ज
 ↓ ↓ ↓
 दूसरे देश/राष्ट्र जन्म

दूसरे देश या राष्ट्र से अपने देश या राष्ट्र में आये हुए शब्दों को विदेशी शब्द कहते हैं यथा अरबी, फारसी, तुर्की, बांग्ला, अंग्रेजी, फ्रांसिसी, जापानी आदि होते हैं।

जैसे:-

उपन्यास (बांग्ला), आदमी (फारसी), डाक्टर (अंग्रेजी), आफिसर (अंग्रेजी), तम्बाकू (पुर्तगाली)

5 संकर शब्द

दो या दो से अधिक देशों के शब्द से बना शब्द संकर शब्द कहलाता है।

जैसे:-

रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी)
 ↓
 अंग्रेजी हिन्दी

उ व्युत्पत्ति / रचना / संरचना / बनावट के आधार पर शब्दों के भेद -

उस आधार पर शब्दों के मुख्य रूप से 3 भेद होते हैं। :

① रुढ़ शब्द :-

किसी शब्द को खण्ड - खण्ड करके के बाद यदि उसका कोई अर्थ न निकल तो वह रुढ़ शब्द कहलाता है।

जैसे :- नाक → ना + क

मान → का + न

किताब → कि + ताब

कापी → का + पी

Note :-

शब्द रचना कि उकाई -

- * संधि
- * समास
- * उपसर्ग
- * प्रत्यय

* वे शब्द जिसमें संधि, समास, उपसर्ग और प्रत्यय न हो वही रुढ़ शब्द होते हैं।

योगिक शब्द :-

② वे शब्द जो 2 या 2 से अधिक शब्दों के योग से बने होते हैं योगिक शब्द कहलाते हैं।

जैसे -

आगलबूला, धुड़सवारी, दूधवाला आदि।

Note *

यांगिक शब्द सीधे, उपसर्ग, प्रत्यय और (वधुविहीन समास को छोड़कर) बीच सभी समास से बनते हैं।

3 यांग - रुढ़ शब्द -

वे सभी शब्द जिसमें यांग तां हुआ तां लिंगिन वे अपनी सामान्य अर्थ न लेकर केवल विशेष अर्थ प्रकट करते हैं यांग - रुढ़ शब्द कहलाते हैं।

Note *

जिसमें वधुविहीन समास को सभी उदाहरण आते हैं।
जैसे - पंकज, चतुर्भुज, दशानन, त्रिनेत्र आदि।

4 शब्द शक्ति के आधार पर शब्दों के भेद -

शब्दों को जिस शक्ति / माध्यम / व्यापार / साधन के द्वारा उसके अर्थ का ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति के भेद -

- ① वचन (अभिधा) * स्पष्ट शक्ति (कथन)
मुदावरी
लौकिक
② लक्षक (लक्षण) *
यमक, लक्षक
व वचन अंतर
③ व्यञ्जन (व्यञ्जना) *
रुढ़ न मोहन और
प्रयोजनवासी (अभिप्राय)
जैसे - राम दारिद्र्य-द्र

① वाचक (अभिधा) :-

ये शब्द चिन्ता सीधा सांकेतिक अर्थ (मुख्यात वाच्यार्थ) लिखा जाय आविधा कहलाते हैं।

जैसे - वह जाता है। वह खड़ा गया है।
मोहन खीर है। वह खाता है।
नाच रही है। वह कंग्रेस है।

② लक्षक (लक्षणा) :-

जिस शब्द का मुख्यात या वाच्यार्थ न लेकर उसका लक्ष्यार्थ अर्थात् उसके लक्षणा के अर्थ को लिया जाय वहा लक्षणा शब्द आक्षेप होती है।

जैसे -

मोहन मोहन से कहता है कि तुम तुम गये है।

तुम बड़े हो।

श्याम खीर है।

पंजाब खीर है।

भारत खीर है।

पाकिस्तान खीर है।

Note :-

सभी मुहावरों व लोकप्रयोगों लक्षणा के अन्तर्गत आते हैं।

3 व्यंजन (व्यञ्जना) *

व शब्द प्रिनका न तो मुख्यार्थ लिया जाय और न ही लक्ष्यार्थ लिया जाय वे सभी शब्द व्यञ्जना को अन्तर्गत आते हैं।

उदाहरण :-

- ① एक चोर अपनी साथी चोर से कहता है कि रात बड़ी अच्छी है।
- ② एक माँ अपनी पुत्री से कहती है कि संवसा का समय हो गया है।
- ③ सूर्य निकल आया है।

Note *

व्यंजन, जैसे व वक्राकृति अल्कार के सभी उदाहरण व्यञ्जना शब्द आकृति के अन्तर्गत ही आते हैं।

5 रूप / रूपांतर के आधार पर शब्दों के भेद -

2

भेद होते हैं

① विकारी -

व शब्द जो लिंग, वचन, काल और कारक के आधार पर उनके रूप में विकार (परिवर्तन) हो जाय उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। विकारी शब्द के मुख्य रूप से 4 भेद हैं।

- ① संज्ञा
- ② सर्वनाम
- ③ क्रिया
- ④ विशेषण

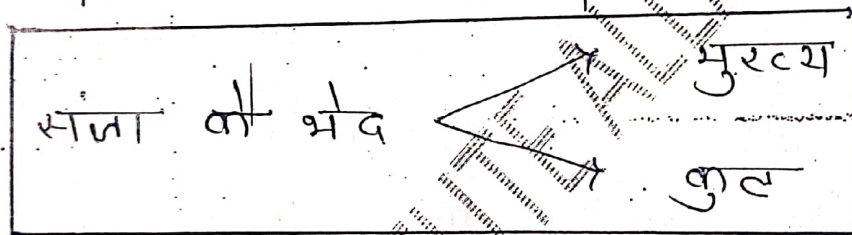
①. संज्ञा —

संज्ञा

↓
सम् + ज्ञा

↓ ↓
समान ज्ञान

व शब्द प्रिनस किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान प्राणी अथवा भाव के नाम को बोध हो उगटे संज्ञा कहते हैं।



① व्यक्तिवाचक संज्ञा
↓
एकवचन / वृद्धय

विशेषता एक से अधिक वचन बनायी जा सकती है वृद्धवचन नहीं बनता है नही बनाया जा सकता है।
व्यक्तिवाचक संज्ञा (माया/बेली)

② जातिवाचक संज्ञा
↓
बहुवचन वचता है

③ समूहवाचक संज्ञा
3 + 2 = 5

3 अदृश्य ← ③ भाववाचक संज्ञा

① व्यक्तिवाचक संज्ञा *

व शब्द को किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान और प्राणी के नाम

को व्यक्त करे और उसमें हम किसी विशेष
अर्थात् एक वस्तु, स्थान प्राणी के नाम पर
पड़ना जाय वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे -

हिमालय, गंगा, यमुना, राम, उत्तर प्रदेश
भोलापुर, अमरिका, राजिया आदि।

2 जातिवाचक संज्ञा -

वे शब्द जिसमें किसी व्यक्ति
वस्तु, स्थान प्राणी के जाति का बोध हो
जातिवाचक संज्ञा कहलाते वे सभी शब्द
जिनमें हमारा ध्यान किसी एक पर स्थिर रहे
हो जाता वो जातिवाचक संज्ञा हैं।

जैसे -

विक्रम, नदी, पर्वत, देश आदि।
जातिवाचक संख्या के मुख्य रूप से 2 भेद
होते हैं।

① द्वयवाचक संज्ञा -

② समूहवाचक संज्ञा -

वे शब्द जिसमें समूह या
समुदाय का बोध हो उसे समूहवाचक संज्ञा
कहते हैं।

भौंड, मेला, समिति, सभा, लक्ष, पुलिस
सैना आदि।

3 भाववाचक संज्ञा →

व संज्ञा जबद जो किसी दिखायी नहीं देता चिन्ता केवल आभास या महसूस किया जा सकता है व सभी भाव वाचक संज्ञाये कहलाती है

* भाववाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, विशेषण और क्रिया में प्रत्यय लगाकर भी बनाया जाता है।
जैसे -

भूख, व्यास, भलाई, बुराई, आदिभय, नरत्व, स्त्रित्व, इसानियत, मनुष्यता, मानवता आदि।

कुमार → कामाग्नि, कुपार - कुवारापन

↓
विशेषण

↓
भाववाचक

पुरुष -

पुरुषत्व

↓
जातिवाचक

↓
भाववाचक

① व्याक्तिवाचक संज्ञा से जातिवाचक संज्ञा बनाना।

उदाहरण →

① इस देश में प्रयत्नशीलता की कमी नहीं है।
② यह विभिषणों की कमी नहीं है।

2. जातिवाचक संज्ञा को व्याक्तिवाचक में बदलना :-

① पांडेल्ली देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे। * जवाहरलाल नेहरू

② आस्ट्री जो का जन्म दिन प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को मनाया जाता है * →

3 भाववाचक संज्ञा से जाति - वाचक संज्ञा में बदलना * →

जब भाव वाचक संज्ञा का बहुवचन के रूप में प्रयोग किया जाता है तो वह जाति वाचक संज्ञा हो जाता है।

जैसे *

बुराई

↓
भाववाचक

दूरि

↓
भाववाचक

बुराईयाँ से बचा

↓
जातिवाचक

→ हमारे बीच दूरियाँ बढ़ गयी हैं

↓
जातिवाचक

सर्वनाम :-

सर्व + नाम

↓ ↓
सभी (सबका) नाम

सर्वनाम शब्द का सापेक्षिक अर्थ - सभी ना सबका नाम है अर्थात् वह नाम जो सबके द्वारा प्रयोग किया जा सके सर्वनाम कहलाता है।

जैसे *

मे, तुम, आप, आदि ॥

परिभाषा

सर्वनाम के विकारी शब्द होते हैं जो संज्ञा के जगह प्रयुक्त किया जाते हैं। हिन्दी में सर्वनामों की मूल रूप कुल संख्या ११ होती है — मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, क्या, क्या।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के मुख्य रूप से

कुल ६ भेद हैं।

- ① पुरुषवाचक सर्वनाम ② निश्चयवाचक सर्वनाम
- ③ निश्चयवाचक सर्वनाम ④ अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- ⑤ सम्बन्धवाचक सर्वनाम ⑥ प्रश्नवाचक सर्वनाम

① पुरुषवाचक सर्वनाम के सर्वनाम शब्द जिनसे जो पुरुषों के बदले प्रयोग किये जाते हैं वहाँ पुरुषवाचक सर्वनाम होता है। यथा पुरुषशब्द से अभिप्राय पुरुष व स्त्री दोनों हैं।

- ① उत्तम पुरुष — बोलने वाला / कहने वाला — मैं
- ② मध्यम पुरुष — सुनने वाला — तुम, आप
- ③ अन्य पुरुष — जिसके बारे में कहा जाय

यह, वह

मैं — मैंने, हमने, हमसे, मुझसे

तु, आप — तुम, तुमने, आपसे, अप्स आपने।

यह, वह → ये, ये सब, वे, वे सब
उत्तम पुरुष → मैं जा रहा हूँ।
मध्यम पुरुष → तुम जा रहे हैं।
अन्य पुरुष → वह जा रहा है।

Note → कुल ॥ मूल सर्वनामों में कारक चिह्न लगाकर हम अन्य सर्वनामों का भी निर्माण करते हैं।

Ex → ① वह वाचाचर आया है।

↓
 अन्य पुरुष
 ① यह आम उदाहरण है।

↓
 अन्य पुरुष
 ③ वह कितना मेरी है।

↓
 निश्चय वाचक सर्वनाम

② निश्चय वाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द जो अपने
 लिये 'आप' के रूप में प्रयोग किये जाते हैं।
 निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे -

① यह कार्य मैं आप ही आप कर लूंगा।

↓ आपने आप - निश्चय वाचक

② वह अपने आप ही यह कार्य कर लूंगा।

↓
 अन्य पुरुष

↓
 निश्चय वाचक

3. निश्चयवाचक सर्वनाम - ये सर्वनाम शब्द प्रियसे निश्चितता का बोध हो निश्चयवाचक जैसे -

यह, वह, मे, वे, वो आदि।

उदाहरण -

यह मेरी पुस्तक है।

यह मेरी बैग है।

मे मेरे घर है।

वे मेरे लच्छे हैं।

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम - ये सर्वनाम प्रियसे अनिश्चितता का बोध हो उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम है - कौड़ी, कुछ।

जैसे - कौड़ी कौड़ी खड़ा है।

दूध में कुछ गिरा गया।

उधर कुछ पड़ा हुआ है।

राम के साथ कौड़ी आया है।

5. सम्बन्ध-वाचक सर्वनाम -

ये सर्वनाम शब्द जो किसी दूसरे सर्वनाम शब्द से सम्बन्ध बनाने का कार्य करें सम्बन्ध-वाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण —

- ①: जैसी करनी वैसी भरनी ।
- ② जो पढ़ेगा वही पास होगा ।
- ③ जो अच्छा काम करेगा सो अच्छी फैदा पाये ।

6 प्रश्नवाचक सर्वनाम —

वे सर्वनाम अब जो कि प्रश्न पूछने का काम करे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं ।

जैसे —

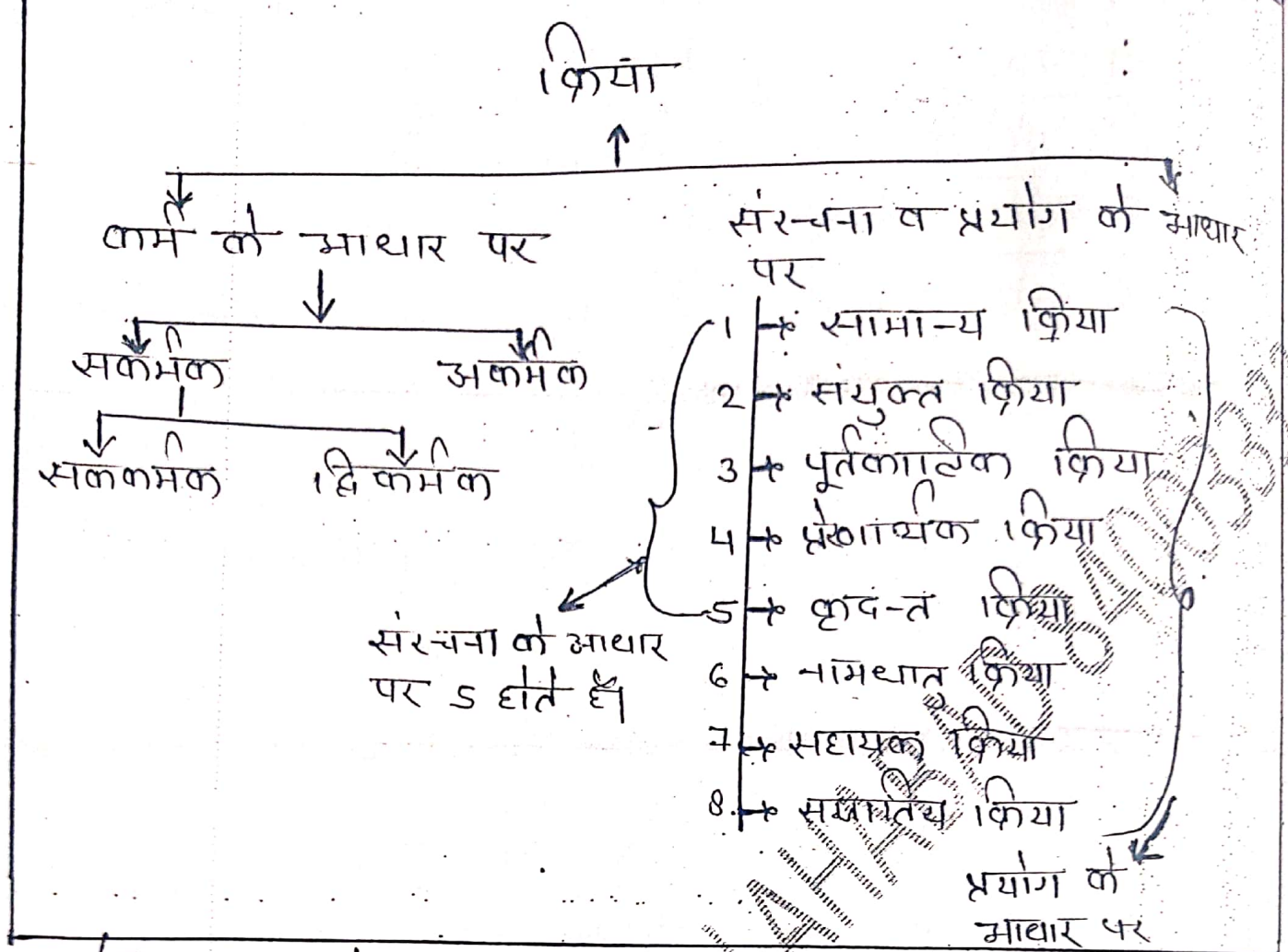
- ① कौन वाला गया है ?
- ② कौन रुका है ?
- ③ क्या हो रहा है ?

किया

जिस विकास अब से किसी काम का करना या होना पाया जाय उसे किया कहते हैं ।

जैसे —

- वह पढ़ता है ।
- वह चलता है ।
- वह रुकेला है ।



(Root verb)

धातु * क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।
अर्थात् क्रिया में प्रत्यय हटाने पर जो मूल शब्द
बचता है वही धातु है।
जैसे - पढ़, गा, सो, रो, चढ़ आदि।

क्रिया के भेद :-

2 होते हैं।

1. कार्य के आधार पर क्रिया के भेद - कार्य के
आधार पर क्रिया के मुख्य रूप से 2 भेद हैं।
① सकर्मक ② अकर्मक

(1) सकर्मक * जिस क्रिया के साथ कार्य हो या

कर्म होने कि सम्भावना हो वहा सकर्मक क्रिया होती है।

Note :-

क्रिया के साथ क्या, किस और किसका प्रश्न लगाने पर यदि कोई उत्तर प्राप्त हो तो वह सकर्मक क्रिया होती है और यदि क्या, किस, किसका का प्रश्न लगाने पर कोई उत्तर न प्राप्त हो या कता हो उत्तर के रूप में प्राप्त हो तो वह असकर्मक क्रिया होती है।

सकर्मक क्रिया में क्रिया का कल या व्यापार कर्म पर पड़ता है और असकर्मक क्रिया में क्रिया का कल या व्यापार कर्त्ता पर पड़ता है।

उदाहरण :-

वह कितना पढ़ता है। (प्रत्यक्ष कर्म)	} सकर्मक क्रिया
वह पढ़ता है। (अप्रत्यक्ष कर्म)	
वह लिखता है।	
वह पत्र लिखता है	

सकर्मक क्रिया के भेद

सकर्मक क्रिया के मुख्य रूप से 2 भेद हैं।

① एककर्मक ↓ जहाँ 1 कर्म है	② द्विकर्मक ↓ जहाँ 2 कर्म हैं।
----------------------------------	--------------------------------------

जैसे मोहन पढ़ता है - एक - कार्यक
मोहन पत्र लिखता है - $\rightarrow$ $\downarrow$
एक मोहन का पाठ पढ़ती है - $\rightarrow$ द्विकर्मक

$\downarrow$ $\downarrow$
गौण कर्म - मुख्य कर्म -
अध्यापक ने छात्रों को हि-दी पढ़ाई $\rightarrow$ द्विकर्मक
 $\downarrow$ $\downarrow$
गौण मुख्य

Note * राजा ने गरीबों को कामकाज देने से दिया
 $\downarrow$ एककर्मक

सम्प्रदान कारण
रजा को लिये व दिया जाय सम्प्रदान कारण
दान ; पुरस्कार होता है।

देने

कुछ समय को लिये -

पुस्तक भंडार -

$\leftarrow$ गौण कर्म होगा

अपवाद ! -

$\rightarrow$ यदि देने को अर्थ में सदा के लिये कोई
वस्तु दे दी जाय।

जैसे $\rightarrow$ दान, पुरस्कार, भेद आदि के
लिये गौण कर्म ही सम्प्रदान कारण
होते हैं।

अकर्मक क्रिया :-

जिस क्रिया के साथ कर्म न
हो अथवा कर्म होने के सम्भावनाओं भी न
हो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे -

- ① - राम जाता है।
- ② - मोहन बाजार जाता है।
- ③ - चिड़िया उड़ती है।
- ④ - चिड़िया आकाश में उड़ती है।
- ⑤ - वेड़ से पत्त गिरते हैं। → अकर्मक
↓
आपादन विभाजित कर्ता किया
कारक
- ⑥ - धूँ - धूँ से लवण भरता है। → अकर्मक
↓
कारणकारक कर्ता

प्रयोग व संरचना के आधार पर क्रिया के भेद :-

1. सामान्य क्रिया
 2. संयुक्त क्रिया
 3. पुरुषार्थिक क्रिया
 4. प्रेरणाथक क्रिया
 5. कुदत क्रिया
 6. नामसातु क्रिया
 7. सहायक क्रिया
 8. संप्रसारक क्रिया
- संरचना के आधार पर ⑤ होते हैं
1. सामान्य क्रिया :-

वह वाक्य जिसमें एक ही कार्य है और उस कार्य के लिए एक ही क्रिया पद है उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।

- जैसे - ① मोहन पढ़ता है। कार्य = 1। किया पद = 1।
 ② वह खेल्ता है।
 ③ मोहन पत्र लिखता है।
 ④ वह बाजार जाता है।

2 संयुक्त किया

जब वाक्य में एक कार्य और 2 किया पद हो तो वहाँ संयुक्त किया होता है।

जैसे :- ① वह पद लिया।

कियापद = 2, कार्य = 1 (पढ़ने का)

② मोहन ने खाना खा लिया।

कियापद = 2, कार्य = 1 (खाने का)

3 पूर्वकालिक किया

पूर्वकालिक किया में मुख्य किया के पहले से किया होती है वह पूर्ण हो जाती है इसमें दो कार्य और उस 2 कार्य के लिए 2 किया पद भी होती हैं मुख्य किया के बाद 2 आने वाली किया ही पूर्वकालिक किया कहलाती है। पूर्वकालिक किया में अधिकतर 'कर' शब्द जुड़ा होता है।

जैसे :-

वह पढ़कर सो गया।

वह लड़कर खेलने चला गया।

4 प्रेरणार्थक क्रिया

जब वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य से कार्य करवाये या कार्य कराने की प्रेरणा देता है तो वह प्रेरणार्थक क्रिया होती है।

जैसे :-

① वह हसाता है।

② वह मोहन को हसाता है।

③ मोहन मोहन को उसके भाई से हसाता है।
प्रेरणार्थक क्रिया के भी दो भेद होते हैं।

① प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया ② द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से करवाता है जबकि द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता स्वयं कार्य न किसी अन्य को कार्य करवाने की प्रेरणा देता है।

जैसे :-

अध्यापक छात्रों को पढ़ाता है → प्रथम प्रेरणार्थक
प्रधानाध्यापक अध्यापक से छात्रों को पढ़वाता है → द्वितीय प्रेरणार्थक

5 कृदन्त क्रिया

जब वाक्य में 'ना' के अलावा या 'ना' को छोड़कर कोई अन्य प्रत्यय जोड़कर क्रिया बनायी जाती है तो वह कृदन्त क्रिया कहलाती है।

जैसे :-

चल + ता = चलता
चल + एगा = चलेगा
चल + आ = चला

पढ़ + ता = पढ़ता
पढ़ + आ = पढ़ा
पढ़ + एगा = पढ़ेगा

6 नाम-धातु क्रिया * संज्ञा, सर्वनाम और विभक्ति में प्रत्यय लगाकर जब कोई क्रिया बनाई जाती है तो उसे 'नाम-धातु' क्रिया कहते हैं।

जैसे :-

(संज्ञा)	वात	→	वाहियाना
(॥)	लज्जा	→	लज्जाना / लज्जियाना
	हाथ	→	हाथियाना
	सुन्दर	→	सुन्दरता
	अपना	→	अपनाना

7 सहायक क्रिया

यह क्रिया जो मुख्य क्रिया के साथ उसकी सहायक के लिये आती है सहायक क्रिया कहलाती है।

जैसे :- वह पढ़ रहा है।

वह गाना गाता है।

> सहायक क्रिया है

8 संज्ञातीय क्रिया :-

जब किसी वाक्य में समान धातु के 2 क्रिया पद एक ही कार्य के लिये प्रयोग के नाथ तो वहा पर संज्ञातीय क्रिया होती है।

कुछ महत्वपूर्ण क्रियाएँ :-

अनुकरणालेखक किया है एक दो ध्वनियाँ के
अनुकरण बार-बार से बनी किया। अनुकरण
कियाय कदवाती है।

જાન — જાન — ૬ જાનજાનાના
 જામ — જામ — ૬ જામજામાના
 રવન — રવન — ૬ રવનરવનાના

(2) आज्ञाथक किया व कियाये प्रियत आज्ञा अनुमति व प्रार्थना का बोध हो उन्हें आभासी कियाये कहते हैं।

राष्ट्रगान का सम्मान करा -

(3) संज्ञार्थक क्रियायें हैं जब मुख्य धातु के साथ 'ना' प्रत्यय लगाकर क्रियायें बनायी जाती हैं तो वे संज्ञार्थक क्रियायें कहलाती हैं।

$$\frac{1}{x} + \frac{1}{x^2} \rightarrow \frac{1}{x^2}$$

सिखा * हसना स्वास्थ्य के लिए लाभ
दायक है

4 रजक क्रिया *

संयुक्त क्रिया के साथ मर्मा
वाली सहायक क्रिया रजक क्रिया कहते हैं
मेरु पद लिया । ← रजक क्रिया
वह सौ गया ।

विशेषण (Adjective)

संज्ञा - विशेषण
 सर्वनाम - विशेषण
 क्रिया - क्रिया विशेषण
 विशेषण - प्रविशेषण

} विशेषता बताई जाय

अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

जैसे :-

काली भैंस, सुंदर दूध, बुद्धिमान मानव
 विशेषण विशेषण विशेषण विशेषण

विशेष्य विशेषण जिस शब्द से विशेषता (संज्ञा / सर्वनाम) दी जाती है।

↑ विशेष्य :-

जिसकी विशेषता बताई जाय उस विशेष्य कहते हैं।

उद्देश्य विशेषण :-

विशेषण + विशेष्य = उद्देश्य विशेषण

विशेष्य के पदों माने वाले विशेषण उद्देश्य विशेषण कहलाता है।

उद्देश्य विशेषण - पीला आम।

विधेय विशेषण :-

विशेष्य + विशेषण = विधेय विशेषण

विश्लेष्य को बाद और क्रिया को पहले आने वाला विश्लेषण विधेय विश्लेषण कहलाता है।

विश्लेष्य आम पीला है
विश्लेषण

बहु वाचक बुद्धिमान है
सार्वनामिक विश्लेषण

विश्लेषण के भेद :-

(1) गुणवाचक विश्लेषण * जहाँ गुणशब्द का अर्थ सीमित न होकर व्यापक है अर्थात् हम कह सकते हैं कि किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, रंग, आकार, अवस्था, दशा, दिशा, स्वर्ण, अध, स्थान, काल और स्वाद आदि का बोध कराने वाले शब्द गुणवाचक विश्लेषण कहते हैं।

- 1* गुण — अच्छा, बुरा
- 2* दोष — बुरा, उदण्ड
- 3* रंग — काला, गारा, पीला
- 4* अवस्था — बूढ़ा, युवा
- 5* आकार — छोटा, बड़ा, त्रिकोना
- 6* दशा — नया, पुराना
- 7* दिशा — उत्तर, पूर्वी
- 8* स्वर्ण — कर्मल, कठोर

- 9 अंश — दुर्गन्ध युक्त , सुगन्ध युक्त
 10 स्थान — भारतीय , कश्मीरी
 11 काल — ऐतिहासिक , प्राचीन
 12 स्वाद — खट्टा , मीठा , कड़वा

उदाहरण *

काला भैंस । सफ़ेद जाय ।
 बुद्धिमान लड़का । लयन मादमी ।

Note *

वाक्य में कसा कसी अथवा कसै प्रश्न लगाने पर जो उत्तर प्राप्त होता है उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

2 संख्यावाचक विशेषण *

वह विशेषण जल्द प्रसंग संज्ञा या सर्वनाम के संख्या सम्बन्धी विशेषता प्रकट करे जाय उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
संख्यावाचक विशेषण के भेद *

मुख्य रूप से 2

भेद होते हैं।

① निश्चित संख्यावाचक विशेषण

② अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

1. निश्चित संख्यावाचक विशेषण * निश्चित संख्यावाचक

विशेषण में संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित संख्या

का बोध होता है।

इसके मुख्य रूप से 6 भेद हैं।

1. गणनावाचक —

- * पूर्णांकवाचक — एक, दो, तीन, चार
- * अपूर्णांकवाचक — डेढ़, सवा, आठ, एक तिहाई

2. क्रमवाचक — पहला, दुसरा, तीसरा

3. आवृत्तिवाचक — दो गुना, चार गुना, पांच गुना
इकट्ठा।

4. समुदायवाचक — दोनों, तीनों, चारों, सब

5. समुच्चयवाचक — वर्जन, पच्चीसी, पच्चास,
सकड़, सफाई

6. प्रत्येकवाचक — प्रत्येक, प्रतिदिन, प्रतिमाह,
प्रतिवर्ष, दो-दो, चार-चार

2. अनिश्चित संख्यावाचक विरोध —

वे विरोध

शब्द जिसमें किसी संज्ञा या सर्वनाम कि

अनिश्चित संख्या का बोध न होकर केव

अस्पष्ट अनुमान व्यक्त किया जाय तो वह

अनिश्चित संख्यावाचक विरोध होता है।

जैसे — कुछ आदमी, बहुत सी औरत, कुछ
केवल

3. परिमाण वाचक विरोध —

वे विकारी शब्द

जो संज्ञा या सर्वनाम कि भाषा, लिंग, सम्बन्ध-विशेषता का बोध कराये उन्हें परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं जैसे गिना-हो जा सकता है

जैसे -

10 kg चीनी । 5m लम्बा ।
कुछ मकखन । 2 ली० दूध ।

← परिमाण वाचक विशेषण को भी मुख्य रूप से 2 भेद होते हैं ।

→ निश्चित परिमाणवाचक विशेषण वे परिमाणवाचक विशेषण जिस निश्चितता का बोध हो निश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहलाते हैं ।

जैसे -

8 kg चीनी । , 2 kg मकखन ।
5m लम्बा । , 3 l दूध ।

→ अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण वे परिमाणवाचक विशेषण जिनमें अनिश्चितता का बोध हो अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं ।

जैसे -

कुछ कित्ती दीं, बहुत सारा मकखन,
कुछ ली० दूध ।

संकेतवाचक / सार्वनामिक विशेषण -

जब किसी

संज्ञा के ठीक पहले सर्वनाम शब्द का प्रयोग

किया जाता है तो वह सर्वनाम शब्द उस संज्ञा को विशेषता बताने का कार्य करता है जिससे उस सर्वनाम शब्द को सार्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।

नोट *

सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रस्तुत होते हैं जबकि संज्ञा के लीक पहले सार्वनामिक विशेषण का प्रयोग होता है।

जैसे *

वह शम बाजार जाता है।
 वह चिडिया उड़ रही है।
 वह रमेश है।
 वह अकाश है।

संकेतवाचक
 विशेषण

आविकारी शब्द

(अव्यय भी कहा जाता है)

आविकारी शब्द वे शब्द जिनमें लिंग, वचन, काल या कारक इनमें से किसी आधार पर विकार या परिवर्तन न हो आविकारी शब्द कहलाते हैं। इन आविकारी शब्द कहलाते हैं इन आविकारी शब्द कहलाते हैं अव्यय भी कहते हैं अव्यय अर्थात् जिसका रूप नहीं होता।

आविकारी शब्द के भेद -
इसके मुख्य रूप से दो भेद हैं।

- ① क्रिया - विशेषण
- ② सम्बन्धवाचक
- ③ समुच्चयवाचक
- ④ विस्मयादिवाचक

Note

निपात, उद्बन्धि और प्रत्यय आविकारी या अव्यय के अन्तर्गत ही आते हैं।

क्रिया - विशेषण

वे आविकारी शब्द जिनसे क्रिया के विशेषता बतायी जाय क्रिया - विशेषण कहलाते हैं। क्रिया - प्राविशेषण कहने के भूल मत करियेगा।

Note

क्रिया - विशेषण के भी विशेषता जिस शब्द के द्वारा बतायी जाय उसे भी क्रिया - विशेषण

कहते हैं ।
क्रिया - प्राविशेषण कहने- को भूल मत करियेगा
जैसे *

वह बहुत तेज है
↓
क्रिया विशेषण
क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण के भेद *

① कालवाचक क्रियाविशेषण — समय

② स्थानवाचक क्रियाविशेषण

↓
स्थान व दिशा

③ परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

↓
परिणाम

④ रीतिवाचक क्रियाविशेषण

↓
तराका, स्वीकृति, निषेधता,
निर्गन्धता, अनिष्ट चेतना

① कालवाचक क्रियाविशेषण *

जिस क्रियाविशेषण
शब्द से क्रिया के समय सम्बन्धी प्रकट की
जाय वह कालवाचक क्रिया विशेषण होता है।

जैसे *

वह आज आयेगा ।

वह 2 बजे आयेगा ।

राम कल आयेगा ।

वह 8 घण्टे चलता है ।

2 स्थानवाचक क्रियाविशेषण *

वे अविकारी शब्द जिससे क्रिया के स्थान और दिशा सम्बन्धी विशेषता प्रकट की जाय उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

जैसे * ① वह वाराणसी गया है ② वह प्रयागराज आर
③ सूर्योदय पूर्व में होता है। ④ उधर आओ।
⑤ सूर्योदय पश्चिम में होता है ⑥ उधर जाओ।

3 परिमाणवाचक क्रियाविशेषण *

जिस क्रिया - विशेषण शब्द से परिमाण मात्रा का बोध हो वहाँ परिमाणवाचक क्रिया विशेषण होता है।

जैसे :-

① उसने बहुत खनाया। ② उसने कम खनाया।

4 रीतिवाचक क्रियाविशेषण :-

वे क्रियाविशेषण शब्द जिससे क्रिया को करने के रीति या तरीका या ढंग को साथ - साथ स्वीकृति, निषेधात्मकता और अनिषेधता का बोध हो वह रीतिवाचक क्रियाविशेषण होता है।

जैसे * ① हाँ, आओ। ② मत, आओ।

③ वह सरपट दौड़ता है। ④ बस पटापट भर गयी।

⑤ मोहन जरूर भायेगा ⑥ राम शायद भाये।

2* सम्बन्धवाचक अत्यय * वह आविकारी शब्द

जो एक ही वाक्य में दो संज्ञा या सर्वनामों के मध्य सम्बन्ध को दर्शाता है। सम्बन्ध-वाचक अत्यय कहलाता है।

जैसे -

① मोहन को बिना मोहन परेशान रहता है।

② राजू को काजू के साथ अच्छी लगती है।

3* समुच्चयवाचक अत्यय * जो यहाँ से अधिक

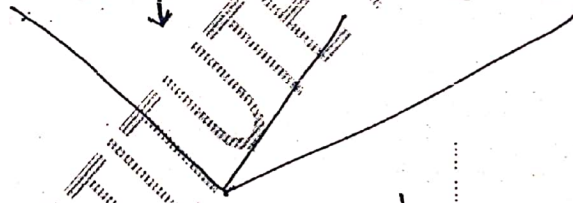
उपवाक्यों को जिस आविकारी शब्द से जोड़ता

का कार्य किया जाय वही समुच्चयवाचक

अत्यय होता है।

अविकारी शब्द

उपवाक्य ① उपवाक्य ② उपवाक्य



समुच्चयवाचक अत्यय

जैसे * सर्वथा पढ़ता है लेकिन सीम साती है

अरि राधा नाचती है

4 विस्मयादिवाचक अत्यय *

वह आविकारी

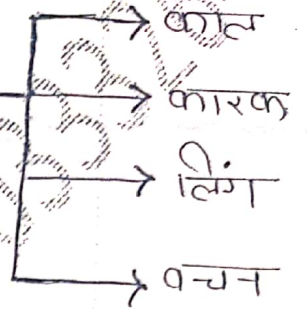
शब्द जिससे विस्मय अर्थात् आश्चर्य का

बोध हो उन्हे विस्मयादिवाचक अत्यय कहते

हैं।

जैसे :- अरे ! तुमने यह काम कर लिया ।
आजो ! सुनते हो ।

* शब्द परिवर्तन के ढकार्ड / अंग / अवयव



काल - किया के जिस रूप से किसी कार्य के हो
का समय ज्ञात हो उसे काल कहते हैं ।
काल के मुख्य रूप से 3 भेद होते हैं ।

1. भूतकाल → बीता हुआ समय
2. वर्तमानकाल → चल रहा समय
3. भविष्यकाल → आने वाला समय

भूतकाल :- किया के जिस रूप से हम बीते
हुए समय का बोध हो वहाँ भूतकाल होता है ।
भूतकाल के मुख्य रूप से कुल 6 भेद होते हैं ।

सामान्य भूतकाल

आसन्न भूतकाल

पूर्वी भूतकाल

अपूर्वी भूतकाल

सादिग्य भूतकाल

हेतु हेतुमाद भूतकाल

1. सामान्य भूतकाल

सामान्य भूतकाल में कार्य के बीते हुए समय में होने का तो बोध होता है किन्तु समय का निश्चित ज्ञान नहीं होता है।

जैसे - मोहन ने पत्र लिखा।
सोहन बाजार गया।

2. आसन्न भूतकाल

इसमें किसी कार्य को भूतकाल में अभी-अभी कार्य समाप्त हुआ जाया जाता है उसकी सहायण किया है।

जैसे - मोहन ने पत्र लिखा है।
सोहन बाजार गया है।
वे लोग बाजार गये हैं।

3. पूर्ण भूतकाल

इसमें कार्य के बीते हुए समय में पूर्ण होने का बोध होता है इसकी सहायण किया है - था, थे, थी।

जैसे - मोहन ने पत्र लिखा था।
वे बाजार गये थे।
सोहन बाजार गया था।

4. अपूर्ण भूतकाल

इसमें कार्य का बीते हुए

समय में चलते रहने का बोध होता है।
इसकी सहायक किया है - रहा था, रहे थे, रही थी
जैसे - मोहन घर लिख रहा था।
साधन बाजार जा रहा था।

5* सांदिग्ध भूतकाल *

इसमें किसी कार्य का भूतकाल में होने का संशय सन्देह होता है।
इसकी सहायक कियाये - होगा, होगी, होंगे।
जैसे - मोहन ने घर लिखा होगा।
साधन बाजार गया होगा।
मीरा बाजार गयी होगी।

Note *

यदि शायद लगाकर भूतकाल का कोई वाक्य बना लिया जाय तो वह सांदिग्ध भूतकाल का भूतकाल हो रहा जायेगा।

जैसे - शायद वह बाजार गया हो / होगा।

6* हेतुहेतुमद् भूतकाल *

इसमें किसी कार्य का भूतकाल में होने और उसमें वर्तित रहने जानने का बोध होता है।

जैसे * ① यदि आप पढ़ें होते तो पास हो जायें होते।

② यदि आप न पढ़ें होते तो फेल हो जायें होते।

Note *

सकारात्मक व -कारात्मक शब्दों का काल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

2 वर्तमानकाल *

क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य का वर्तमान समय में कार्य का होना पाया वही वर्तमान काल होता है।
वर्तमानकाल के मुख्य रूप से कुल 5 हैं।

- | | |
|----------------------|-----------------------|
| ① सामान्य वर्तमानकाल | ② अपूर्ण वर्तमानकाल |
| ③ सदिग्ध वर्तमानकाल | ④ सम्भाव्य वर्तमानकाल |
| ⑤ आक्षेप वर्तमानकाल | |

1. सामान्य वर्तमानकाल *

क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य का वर्तमान में सामान्य रूप से होना पाया गया वही सामान्य वर्तमानकाल होता है।
इसकी सहायक क्रियायें हैं - ता है, ती है, तें हैं।
जैसे - वह जाता है। वे लोग बाजार जाते हैं।
सीता फल खती है। राधा खाना खाती है।

2. अपूर्ण वर्तमानकाल *

क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य का वर्तमान में कार्य का जारी होना पाया गया वही अपूर्ण वर्तमानकाल

होता है इसकी सहायक किया है ।

रहा है , रही है , रहे है ।

जैसे :- वह जा रहा है । भीरा जीत में बड़ी है
सम रहना रहा रहा है । वे लोग जीत में रहे ।

3 संदिग्ध वर्तमानकाल :- किया का जिस रूप से
किसी कार्य का वर्तमान में होना जाया जाय ओ
उसमें संशय / संदेह का भाव पैदा हो वहाँ
संदिग्ध वर्तमानकाल होता है ।

सामान्य वर्तमानकाल में जब होगा, होगी-
और होंगे वाक्य में दिया जाता है तो वह
संदिग्ध वर्तमानकाल का वाक्य बन जाता है ।

अर्थात् इसकी सहायक किया है - ता होगा,
वी होगी और वे होंगे ।

जैसे - वह वापस जाता होगा ।

आभिषेक वापस जाते होंगे ।

गरिमा वापस जाती होंगी ।

4 संभाव्य वर्तमानकाल

किया का जिस रूप से
किसी कार्य का वर्तमान में होने की संभावना
लक्ष्य की जाय वहाँ पर संभाव्य वर्तमानकाल
होता है ।

जब अपूर्ण वर्तमानकाल में होगा, होगी और

होगे इनमें से कोई भी आवक जोड़ा जाय
तो वह सम्भाव्य वर्तमानकाल का वाक्य
बन जाता है।

अर्थात् इसकी सहायक क्रियायें हैं - रहा होगा
रही होगी, रहे होंगे।

जैसे - ① कौपिका बाजार जा रही होगी।

② रुद्र बाजार जा रहा होगा।

③ आयद के बाजार जा रहे होंगे।

④ आयद के रहना रहा रहे हैं।

5 भविष्य वर्तमान काल

क्रिया का वह रूप जिसमें किसी कार्य में भविष्य या अनुभूति
का बोध हो वहाँ भविष्य वर्तमान काल
होता है।

जैसे - दरवाजा खद कर रहा है।

भेद रखें हो जाओ।

* भविष्यकाल

क्रिया का वह रूप जिसमें
किसी कार्य का भविष्य में होना पाया
जाय वह भविष्यकाल का वाक्य होता है।
उ भेद होता है।

1 सामान्य भविष्यकाल

क्रिया का वह
रूप जिस रूप से किसी कार्य का भविष्य

ले सामान्य रूप से होना पाया जाय वह
भविष्यतकाल होता है।

इसकी सहायक क्रियायें हैं - एगा, एगी, ऐगी।

जैसे - वह पुस्तक पढ़ेगा।

सीता पुस्तक लिखेगी।

वे लोग बाजार जायेंगे।

2. सम्भाव्य भविष्यतकाल

क्रिया के जिस रूप से
किसी कार्य का भविष्य में होना की सम्भावना
का बोध हो उसे सम्भाव्य भविष्यतकाल कहते हैं।

जैसे - आयद में बाजार जाऊ।

हो सकती है मैं बाजार कल न जा सकू।

आयद वर बाजार जाएगा।

वह खाना खाएगा।

3. आक्षार्थ भविष्यतकाल

क्रिया के जिस रूप से

किसी कार्य के भविष्य में होना पाया जाय

और उसमें आक्षान्त का बोध हो तो उसे हम

आक्षार्थ भविष्यतकाल कहते हैं।

इसकी सहायक क्रियायें - अएगा।

जैसे -

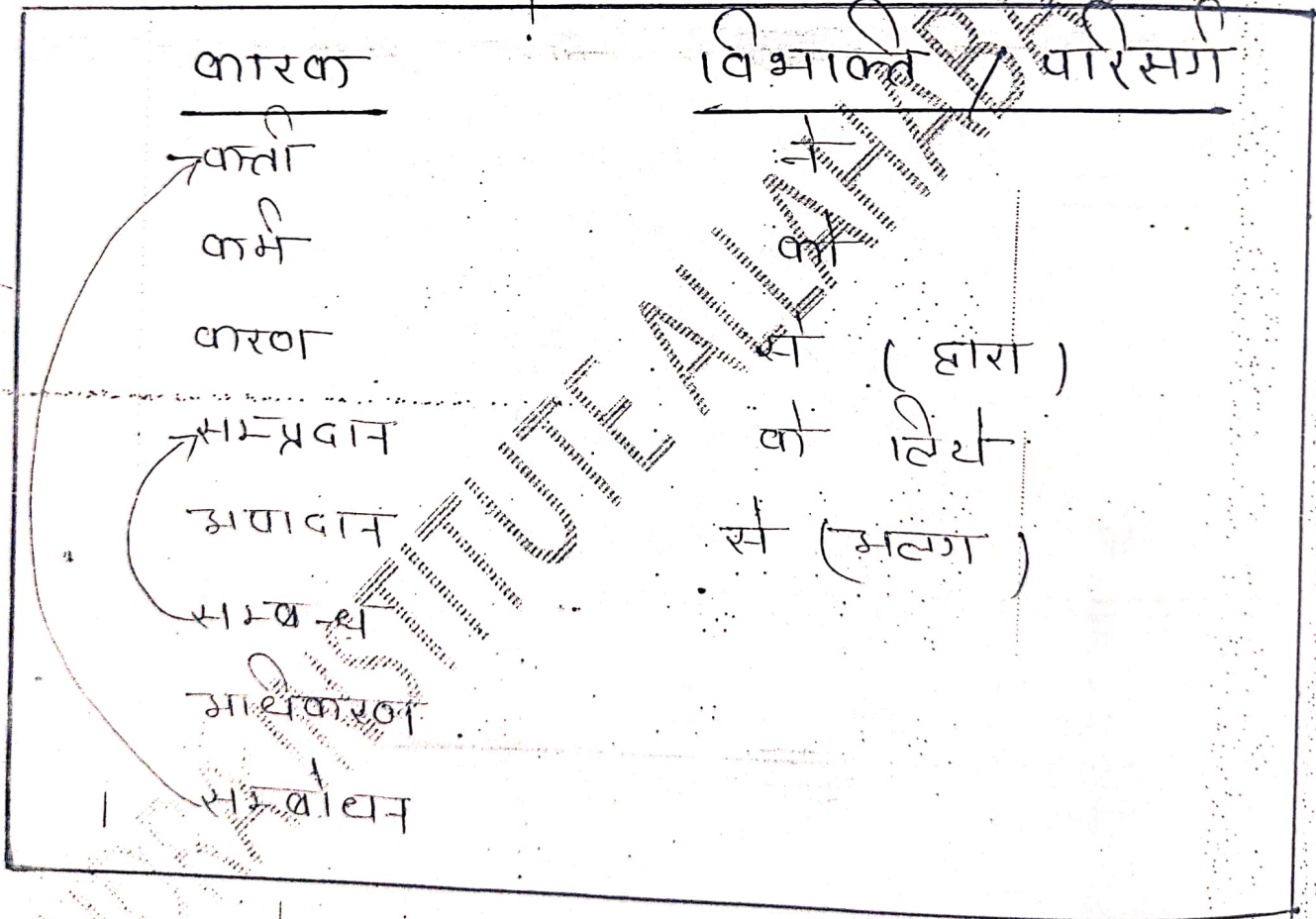
आप कल आइएगा।

तुम कल आइएगा।

अन्त →

हेतुहेतुमद भविष्यकाल - किया तो जिस रूप से किसी कार्य का भविष्य में होना पाया जाय और उसमें जो लगे हो वय पर हेतुहेतुमद भविष्यकाल होता है।

जैसे - यदि तुम पढ़ोगे तो पास हो जाओगे।
यदि तुम नहीं पढ़ोगे तो फेल हो जाओगे।



कारक

कारक *

संज्ञा और सर्वनाम का वह रूप जिससे किया का सम्बन्ध जोड़ा जाता है व्याकरण में उसे कारक कहते हैं।

कारक	विभक्ति / चारसर्ग
① कर्त्ता	+
② कर्म	का
③ कारण	से (द्वारा)
④ सम्प्रदान	को लिये
⑤ अपादान	से (अलग)
⑥ सम्बन्ध	का, के, की, ना, ने, नी, रा
⑦ आधिकरण	में, मे, पर
⑧ सम्बोध्य	है, हो, अरे
कारक	संस्कृत में / मूल रूप से = 6
	हिन्दी में कुल = 8

1 कर्त्ता कारक *

संज्ञा व सर्वनाम का वह रूप जिससे द्वारा कोई कार्य किया जाता है कर्त्ता कहलाता है।
उसे :- मोहन ने गरवंबर पढ़ा।
 सीता ने पत्र लिखा।

Note * कर्ता की विभाक्ति (ने) होता है।
विभाक्ति ने कर्ता के साथ प्रयोग होता भी
है और नहीं भी।

जैसे - मोहन ने भ्रखवार पढ़ा।
सीता ने पत्र लिखा।

2 कर्म कारक -

वह वस्तु या व्यक्ति जिस पर
क्रिया का प्रभाव पड़ता है कर्म कहलाता है।
कर्म की विभाक्ति (का) कर्म के साथ माती
थी है, नहीं भी।

जैसे - वह किताब पढ़ता है। वह गाय से दूध दूँता है।
मोहन, सीता का किताब पढ़ता है।
वह बोलता है।

अपवाद -

1) जान के स्थान में - कर्म कारक
वह बताए जाता है वह जाता है।

2) चारों ओर, दोनों ओर - कर्म कारक
भूमि वगैरे में पाते हैं।

शहर के चारों ओर वृक्ष हैं

शहर के दोनों ओर नदी बहती है।

3- करण कारक *

संज्ञा अधिक कर्ता जिस साधन
से कार्य का सम्पादन करता है उसे करण

कारण कहते हैं।

जैसे - जम न राखण को बाण से मारा।

मोहन गाँव से पढ़ने आया है → अपवाद

रोहन ने मोहन को तलवार से मारा।

अपवाद -
→ साथ → मोहन मोहन के साथ पढ़ने गया है।
→ अंग-भंग → वह नीचे कर से लगड़ा है।
→ समय पूछा → वही मैं कितने बजे है
आय या वताया आय माल हमसे डूबने पड़ी है।

न सम्प्रदान कारण :- कुछ कर्ता के द्वारा किसी के लिए कार्य किया जाता है या किसी को कुछ संपदा के लिए दिया जाता है वह पर सम्प्रदान कारण होता है।

सम्प्रदान कारण की विभाक्ति के लिये वाक्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हो सकती है।

जैसे - राधा सखी खरीदने के लिए बाजार गयी है
माँ बच्चा को रिक्शा दिवाती है।

अपवाद -
→ नमस्कार → भाई को नमस्कार। गुरु जी को प्रणाम
→ सदा के लिये → राजा ने प्रजा को कब-कब वन में दिया।
को जानने वाली शिक्षक विद्यार्थियों में मोहन को
वस्तु पुरस्कार दिया।
→ देवताओं को → यह दूधन सामग्री देवताओं को
समर्पित है।

5. अपवादन कारण -

अपवादन कारण कि विभाक्ति
से, अलगाव का बोध होता है।
जैसे - हिमालय से गंगा निकलती है।
वेद से पत्र गिरते हैं।

अपवाद : 1. अथ तुलना की आय -
जैसे - ① सीमा से सीमा अधिक सुंदर है।
② मोहन से सोहन कम सुंदर है।
सोहन, मोहन से अधिक सुंदर है।

6. सम्बन्ध कारण -

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप
जिससे दूसरे संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्ध
स्थापित किया जाता है उसे सम्बन्ध कारण
कहते हैं इसकी विभाक्ति का, के, की, ज,
रे, जी, ना, नी, होता है।
जैसे - राजा वज्रधर के चार पुत्र थे।

राम की पुस्तक, मोहन की कलम।

अपवाद :-

देने के अर्थ में

→ सदा के लिये दे दी जाय - सम्प्रदान
कारण

जैसे - ①

→ सदा के लिये न दी जाय - सम्बन्ध
कारण

मोहन ने सोहन को पुस्तक दी - सम्बन्ध कारण
② माया ने घोड़ी को लपेट दिया - सम्बन्ध कारण

7. आधिकारण कारक :-

जिस संज्ञा शब्द से आधार का बोध हो उसे अधिकारण कारक कहते हैं।
जैसे - मोहन छत पर पतंग उड़ा रहा है।
मोहन घर में बैठा है।

8. सम्बोधन कारक :-

जिस संज्ञा या स्विनाम से वृत्त या प्रकार का बोध होता है वहाँ सम्बोधन कारक होता है।

जैसे - हे मोहन ! जैसे । पगली भाग जयी

(वाक्य)

वाक्य -

शब्दों के आर्थिक भागों को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के भाग -

↳ उद्देश्य → कर्ता + कर्ता के विस्तार
↳ विधेय → कर्म + कर्म का विस्तार
+ पूरक + क्रिया + क्रिया
विस्तार + सूत्रात्मक क्रिया

1 उद्देश्य →

उद्देश्य को अन्तर्गत कर्ता और कर्ता के विस्तार को रखा जाता है।

2 विधेय →

उद्देश्य के बारे में कहा गया कथन ही विधेय कहलाता है जिसके अन्तर्गत उद्देश्य को छोड़कर बाकी सभी पद आ जाते हैं।

वाक्य के भेद

* प्रयोग व संरचना के आधार पर वाक्य के भेद → 3

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद → 8

क्रिया के आधार पर वाक्य / वाक्य के भेद

→ 3

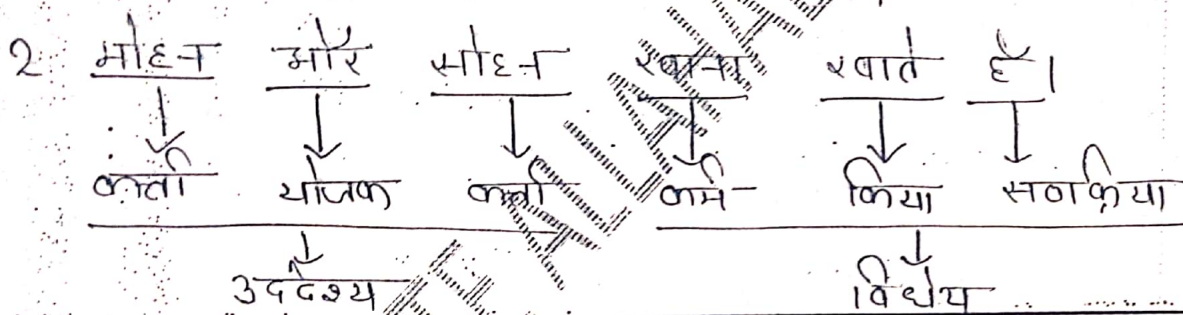
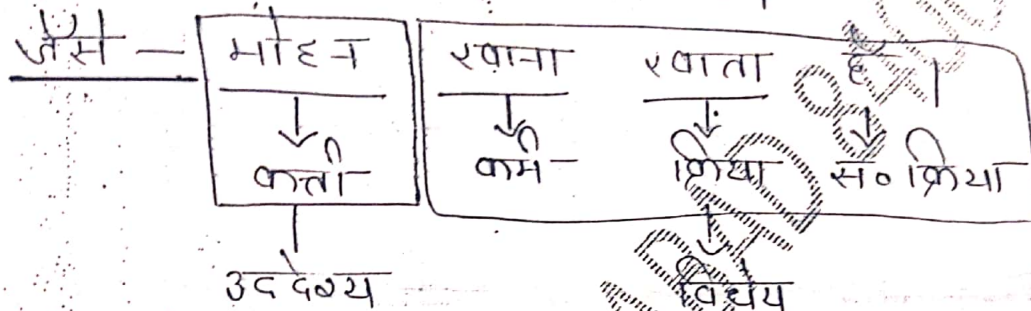
प्रयोग व संरचना के आधार पर वाक्य के भेद

* साधारण वाक्य / सरल वाक्य

संयुक्त वाक्य
मिश्र / मिश्रित वाक्य

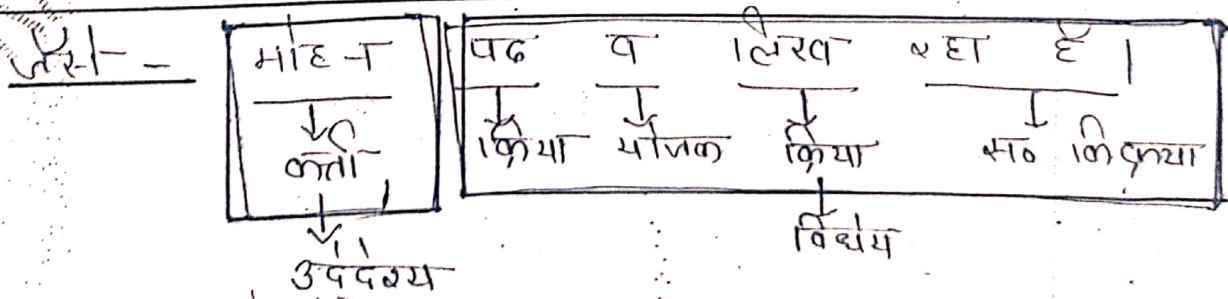
1. साधारण वाक्य —

जब किसी वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय हो तो वही पर वह वाक्य साधारण होता है।



Note

यदि किसी वाक्य में 1 से अधिक कर्ता हो किन्तु उनके द्वारा किया गया कार्य समान हो तो वही पर सभी कर्ता का एक ही उद्देश्य के अंतर्गत रवाते हैं।



Note यदि किसी वाक्य में एक कर्ता हो और उसके द्वारा किये गये कार्यों के संख्या एक से

आधीन हो तो उन सभी कार्यों को एक ही विधेय के अन्तर्गत रखते हैं।

जैसे —

राधा	मोहन	मोरि	सोहन
↓	↓	↓	↓
कत्ती	कत्ती	योजन	कत्ती

↓ उद्देश्य

पढ़	व	लिख	रह	है
↓	↓	↓	↓	↓
किया	योजन	किया	सं. किया	

↓ विधेय

Note * यदि किसी वाक्य में एक से अधिक कत्ती हो और किया भी एक से अधिक हो किन्तु प्रत्येक कत्ती द्वारा समान कार्य किया जाते हो तो वहाँ पर सभी कत्ती को एक ही उद्देश्य के अन्तर्गत और सभी किया को एक ही विधेय के अन्तर्गत रखते हैं।

2 संयुक्त वाक्य :-

संयुक्त वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य होते हैं और वे सभी उपवाक्य स्वतंत्र होते हैं प्रत्येक उपवाक्य एक साधारण वाक्य की तरह होता है।

जैसे — ① मोहन खाना खाता है जबकि सोहन सोता है।

② राम किताब पढ़ता है और ब्याम लिखता है।

③ रोहन लड़ाई करता है किन्तु सोहन पढ़ाई करता है।

राधा खाना खाती है और सोमा भोजन बनाती है।

अधिक बचीबन और माया बतन माजती है।

अभिहित / मिश्र वाक्य :-

मिश्र वाक्य में एक प्रया-
उपवाक्य होता है जो सभी उपवाक्य अभिहित उपा
होते हैं जो प्रधान उपवाक्य पर अभिहित होते हैं।

जैसे -

- ① मोहन ने कहा कि तुम बहुत अच्छे हो।
- ② गांधी जी ने कहा था कि आदिश करी, गतल
मत करी, सदा सत्य बोलो।
- ③ जैसा करोगे वैसा भरोगे।
प्रधान उपवाक्य अभिहित
- ④ यदि पढाई करोगे तो पास हो जाओगे।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद :- 8 होते हैं

- | | |
|--------------|-----------------|
| ① विधानार्थक | ⑤ विस्मयादिबोधक |
| ② आज्ञार्थक | ⑥ निर्वेधात्मक |
| ③ संवेदार्थक | ⑦ संकेतार्थक |
| ④ इच्छार्थक | ⑧ प्रश्नार्थक |

1. विधानार्थक :- वे वाक्य जिसमें कार्य करने की सूचना दी जाय विधानार्थक वाक्य कहलाते हैं।

- ① वह पढता है। ② राम खेत रहा है।
- ③ अयाम् विरवता है।

2. आज्ञार्थक -

आज्ञा का बोध होता है।

जैसे - तुम खड़े हो जाओ।
वहां से किताब उठा लाओ।
कल तुम आफिस चले जाना।

अंतर्दार्थिक -

आयद वह पद रहा होगा।

आयद वह कल भायेगा।

हो सकता है मैं रविवार को पढ़ाया

4 इच्छार्थिक :-

(इच्छा, आर्गण्ड, वदुअर, आदि।)

जैसे - मेरी इच्छा है कि मैं अधिक 2 घण्टे

पढ़ाया।

भगवान करें आप सभी मटल नम्ररी

से पास हो जाय।

5 संकेतार्थिक :- (अति भुक्त वाक्य होना चाहिये)

जब एक किया या कार्य दूसरे किया

या कार्य पर निर्भर हो।

याद- तुम पढ़ोगे तो पास हो जाओगे।

जैसी करनी वैसी भरनी।

6 विस्मयादि बोधक :- (आश्चर्य)

① ऊर पगली भाग गया

② ऊर तुम फल हो गया।

7 निषेधार्थिक :- (नहीं, मना करना)

जैसे -

वह आज स्कूल नहीं गया।

* वह वापार नहीं जा रहा है

* आज तुम वहाँ नहीं जाओगे।

8 प्रश्नार्थक :- (प्रश्न)

* तुम कहाँ जायेंगे ?

* तुम क्यों कर रहे हो ?

* वहाँ क्यों जायेंगे ?

वाच्य

वाच्य :- किया का वह रूप जिससे कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार होने का बोध हो वाच्य कहलाता है। किया का लिंग वचन और पुरुष, कर्ता, कर्म या भाव के लिंग वचन और पुरुष के अनुसार होने का बोध होता है।

जैसे

मोहन पढ़ रहा है। — कर्ता वाच्य

वाच्य के भेद :-

वाच्य के मुख्य रूप से 3 भेद होते हैं।

① कर्तृ वाच्य — सकर्मक / अकर्मक

② कर्म वाच्य — सकर्मक

③ भाव वाच्य — सकर्मक / अकर्मक

④ कर्तृ वाच्य :- यदि किया का लिंग, वचन और पुरुष-कर्ता के लिए वचन और पुरुष के

अनुसार ही तो वहां पर कत्ती प्रधान होता है।

उदाहरण -

राम कितना पढ़ता है।

सीता कितना पढ़ती है।

सोहन खाता है। रानी खाती है।

अपवाद -

यदि कत्ती के साथ उसका न
परिस्त्री लगा हो और काम के साथ
भी परिस्त्री न लगा हो तो किया का
लिंग वचन और पुरुष काम के लिंग, पुरुष
और वचन के अनुसार होता है किंतु
यहां भी कत्ती की स्त्री प्रधानता होती है
इसलिए उसे वाक्य कत्ती वाक्य कहलाते हैं।

जैसे * सोहन ने पत्र लिखा ।

* रानी ने पुस्तक लिखी ।

सोहन ने पुस्तक लिखी ।

रानी ने पुस्तक लिखी ।

कामवाच्य *

कामवाच्य में काम के प्रधानता
होती है यह सदैव सतमीक होती है अर्थात्
किया का लिंग, वचन और पुरुष काम
के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार
होता है।

जैसे — पुस्तक पढ़ी जाती है। पत्र पढ़ा जाता है।
राम को द्वारा खाना खवाया जाता है।
सौधन को द्वारा पत्र लिखा जाता है।

भाववाच्य * क्रिया का वह अंतरण जिसमें वाक्य में भाव की प्रधानता का बोध हो। भाववाच्य कहलाता है। इसमें क्रिया का पुलिग, वचन और पुरुष न तो कर्ता के अनुसार और न ही कर्म के अनुसार होता है। क्रिया सदैव स्वतंत्र होती है। भाववाच्य में क्रिया सदैव पुलिग, एकवचन और अन्य पुरुष में होती है।

जैसे * राम से खया नहीं जाता। * पुलिग, एकवचन
अन्य पुरुष

राम से खया नहीं जाता।
सीता से खवाया नहीं जाता।

सुभन से पढ़ा नहीं जाता।

अव्यय *

यदि कर्ता के साथ उसका परिसर्ग 'ने'।
लगा हो और कर्म के साथ उसका परिसर्ग 'को'।
लगा हो तो वहाँ भी क्रिया सदैव स्वतंत्र होती है और वह वाक्य भाववाच्य का होता है।

जैसे — राम ने रावण को मारा।
मोहन ने सोहन को वण्ड से मारा।
रानी ने सोहन को मारा।
सोहन ने रानी को मारा।